DAILY ASSAM

पाठ-4

"देखो बेटी, आज के अखबार में एक स्कूली बच्ची ने अपनी मुंबई यात्रा के अनुभवों को व्यक्त करते हुए एक सुंदर लेख लिखा है।"

– पिताजी ने अखबार का पन्ना दिखाते हुए निकिता से कहा।

"बेटी, तुम भी अपनी पिछली राजस्थान यात्रा के बारे में एक छोटा-सा लेख तैयार कर सकती हो।"

"क्यों नहीं पिताजी लेकिन क्या मेरा लेख भी अखबार में प्रकाशित हो जाएगा?"

जिज्ञासा भरी नजरों से निकिता ने पिताजी की ओर देखा।

"अवश्य प्रकाशित हो जाएगा बेटी, तुम लिखो तो सही। तुम्हारा लेख मैं स्वयं अखबार के दफ्तर में देकर आऊँगा।"

अखबार में अपना लेख प्रकाशित होने की कल्पना से ही निकिता की आँखें चमक उठीं और वह अपनी पिछली राजस्थान यात्रा की यादों में खो गई। निकिता अपनी राजस्थान यात्रा के अनुभवों का एक आलेख तैयार करने लगी.....

मेरी राजस्थान यात्रा

राजस्थान घूमने की चाहत मेरे मन में बचपन से ही थी। क्योंकि राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा, ऐतिहासिक किले, रेगिस्तान, भोजन तथा विभिन्न उत्सव आदि के बारे में सुनती आई थी। इसलिए राजस्थान घूमने की इच्छा और भी प्रबल हो गई थी। पिताजी ने जब हमें बताया कि इस बार सर्दी की छुट्टियों में हम राजस्थान घूमने जा रहे हैं तो मेरा मन खुशी से झूम उठा। राजस्थान यात्रा के मेरे अनुभवों को आप सब के साथ बाँटते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है। माँ, पिताजी, मेरा छोटा भाई अर्णव और मैं – हमने अपनी गुवाहाटी से नई दिल्ली तक की यात्रा

राजधानी एक्सप्रेस से की। राजस्थान की हमारी पहली मंजिल थी राज्य की राजधानी जयपुर। नई दिल्ली से जयपुर तक की यात्रा भी हमने रेलगाड़ी से ही तय की। लगभग पाँच घंटे की इस यात्रा में, मैं राजस्थान के राजपूत योद्धाओं और यहाँ की वीरांगनाओं की साहसिक कहानियों में खो गई थी। कब जयपुर पहुँच गए मुझे तो पता भी नहीं चला। रात हो चुकी थी। जनवरी का महीना था। हमारे यहाँ की तुलना में ठंड कुछ अधिक ही लग रही थी।

अगली सुबह हम सभी जयपुर घूमने निकले। यहाँ घूमते हुए मैंने देखा कि यह बड़ा ही सुनियोजित शहर है। बाजार सब सीधी सड़कों के दोनों ओर हैं। भवनों का निर्माण भी बिलकुल एक ही तरीके से किया गया है। यहाँ के प्रत्येक भवन में गुलाबी रंग का उपयोग किया गया है इसलिए इसे 'गुलाबी शहर' भी कहते हैं। आज का जयपुर शहर विश्व के सुंदरतम शहरों में से एक माना जाता है। यहाँ हमने अनेक दर्शनीय स्थल भी देखे जिनमें हवा महल, सिटी पैलेस, जंतर-मंतर, आमेर का किला आदि प्रमुख हैं। जयपुर का विश्व प्रसिद्ध हवामहल एक पाँच मंजिली इमारत है, जिसमें सैकड़ों झरोखे बने हुए हैं। जंतर-मंतर पर मैंने देखा कि विदेशी पर्यटक सूर्य की किरणों से समय की गणना कर अपनी कलाई में बंधी आधुनिक घड़ी में वही समय देखकर दंग रह जाते हैं। अपने गौरवशाली इतिहास पर मुझे मन ही मन गर्व हो रहा था।

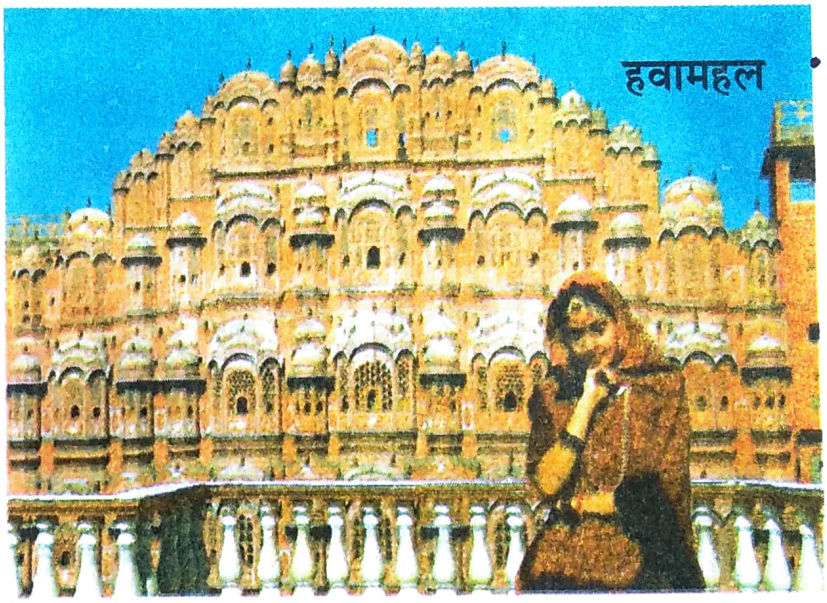
हवामहल

हमारी अगली यात्रा उदयपुर के लिए थी। अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर उदयपुर देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। शायद यही कारण है कि उदयपुर को पूर्व का वेनिस, झीलों की नगरी, राजस्थान का कश्मीर आदि नामों से भी जाना जाता है। इस सुंदर शहर को नजदीक से देखने के बाद मुझे यह अहसास हुआ कि राजस्थान के भौगोलिक परिवेश के बारे में हम कितना गलत सोचते थे। यहाँ घूमते हुए हमने नगर के सबसे ऊँचे स्थान पर स्थित राजमहल को देखा जो काफी भव्य और विशाल है। यह पेशोला झील के तट पर बसा हुआ है। महल से पूरे शहर और झील का दृश्य कितना मनोरम दिखाई देता है। महल के अंदर

DAILY ASSAM

वीर महाराणा प्रताप के जीवन से संबंधित अनेक चित्र, अस्त्र-शस्त्र आदि भी हमने देखे।

मेरी राजस्थान यात्रा का एक अविस्मरणीय पल है अजमेर शरीफ की दरगाह में बिताया गया कुछ समय। महान सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिस्ती की याद में बनी इस दरगाह में देशी-विदेशी पर्यटकों की भीड़ देखने को मिली। हमलोगों ने भी दरगाह में जाकर मन की मुरादें पूरी कीं। वहाँ चल रही कव्वाली को सुनकर दिल खुश हो गया। इसके बाद पास के पुष्कर झील में जा पहुँचे। हमें पता चला कि यहाँ ऊँटों का विश्व प्रसिद्ध मेला लगता है, जिसमें हजारों की संख्या में ऊँट खरीदे और बेचे जाते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश हमें वह मेला देखने को नहीं मिला।

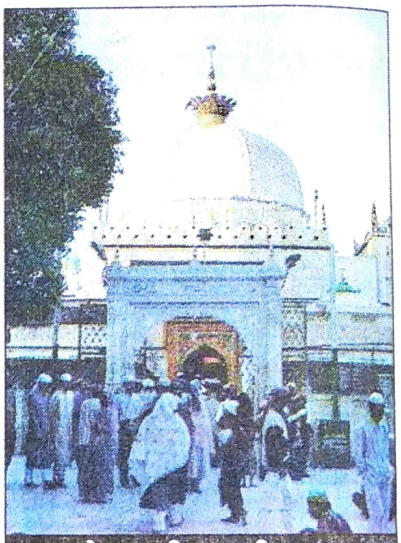
अजमेर शरीफ की दरगाह

इसके बाद हम राजस्थान के हिल स्टेशन माउंट आबू पर पहुँचे। हमने पूरे एक दिन और एक रात वहाँ बितायी। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य देखकर हम अभिभूत हो गए। प्राकृतिक सुंदरता और सुहाने मौसम के लिए इसे राजस्थान का स्वर्ग भी कहा जाता है। यहाँ का ऐतिहासिक मंदिर और प्राकृतिक खूबसूरती पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

हिल स्टेशन माउंट आबू

पर्यटन के संदर्भ में राजस्थान का एक और महत्वपूर्ण आकर्षण है जैसलमेर शहर। अपनी यात्रा का असली आनंद तो हमने यहीं उठाया। यहाँ हमने देखा कि शहर के सारे प्राचीन भवन पीले-भूरे रंग के पत्थरों से बने हैं। इसीलिए यह शहर राजस्थान का 'स्वर्ण शहर' भी कहलाता है। यह क्षेत्र विशाल थार मरुस्थल का एक बड़ा भाग है जिसके कारण यहाँ केवल रेत ही रेत दिखाई देता है। पूरे इलाके में विभिन्न आकार-प्रकार के बालू के ऊँचे-ऊँचे टीलों का विशाल सागर-सा दिखाई देता है। रेत के टीलों का यह अथाह सागर राजस्थान का असल अहसास कराता है। सूर्यास्त के समय यहाँ काफी खूबसूरत नजारा होता है। इस विशाल रेगिस्तान में सभी पर्यटक ऊँट की सवारी का आनंद अवश्य उठाते हैं। हमने भी

थार रेगिस्तान में ऊँटों की कारवाँ

DAILY ASSAM

ऊँट की सवारी का आनंद उठाया। शुरू-शुरू में तो इतने ऊँचे ऊँट की पीठ पर चढ़ते हुए मुझे बहुत डर लग रहा था। मगर साहस करके एक बार चढ़ने के बाद जब ऊँट अपनी लचकदार लंबी गर्दन हिलाते हुए रेत पर चलने लगा तो मुझे बड़ा मजा आ रहा था। ऊँट की सवारी करते हुए मुझे लग रहा था मानो मैं युद्ध में जा रही कोई राजपूत वीरांगना हूँ। उस क्षण को याद करके मैं अब भी रोमांचित हो जाती हूँ।

घूमर नृत्य

यात्रा में हमें राजस्थान के प्रसिद्ध नृत्य 'घूमर', जो उत्सवों के अवसर पर महिलाओं द्वारा किया जाता है, देखने को मिला। साथ ही कठपुतली की कला भी देखने को मिली जिससे हमें बहुत ही आनंद आया। पूरी राजस्थान यात्रा के दौरान हम कई स्थानीय लोगों से मिले और उनसे बातचीत भी की। यहाँ पुरुष का पारंपरिक पहनावा धोती और कुर्ता है। सिर पर पगड़ी भी बाँधी जाती है। महिलाएँ लहंगा और ओढ़नी पहनती हैं। पूरे राज्य में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी और राजस्थानी भाषाओं का प्रयोग होता है। हिंदी समझने और बोलनेवाले लोग पूरे राज्य में कहीं भी अपने को अजनबी महसूस नहीं करने देते। यात्रा के दौरान हमने शाकाहारी स्वादिष्ट भोजन के स्वाद का भरपूर आनंद उठाया। वहाँ के लोगों से मिलकर मुझे लगा कि वे काफी मिलनसार और अतिथि-परायण होते हैं।

रेगिस्तानी इलाके में बरसात बहुत कम होती है और यहाँ पानी भी सहज ही उपलब्ध नहीं होता। गर्मी के मौसम में तापमान भी काफी अधिक हो जाता है। लेकिन राज्य के दूसरे हिस्से में मौसम सामान्य रहता है। यह एक अति मनोरम और विविधताओं से भरा हुआ राज्य है।

हमारी छुट्टियाँ समाप्त हो रही थीं। हमें तय समय पर लौटना जरूरी था। मुझे अभी भी लगता है कि राजस्थान में और बहुत कुछ हैं जो हम देख नहीं सके। आप लोग भी मौका मिले तो राजस्थान जरूर जाइए। पर्यटन स्थल के रूप में यह एक बहुत ही आकर्षक और देखने लायक जगह है।

आलेख को पूरा करने के बाद निकिता ने उसे लिफाफे में भरा। फिर लिफाफे पर स्थानीय हिंदी अखबार के संपादक महोदय का नाम-पता लिखकर अपने पिताजी को सौंप दिया।

अभ्यास-माला

पाठ से

1. सही विकल्प चुनकर उत्तर दो :

(क) निकिता अपनी राजस्थान यात्रा के अनुभव को लिखकर

(अ) विद्यालय की पत्रिका में प्रकाशित करना चाहती थी।

(आ) परीक्षा में आने वाले निबंध के रूप में तैयार करना चाहती थी।

(इ) अखबार में प्रकाशित करना चाहती थी।

(ई) अपनी सहेली को पत्र भेजना चाहती थी।

(ख) पिताजी ने निकिता से कहा था कि वे लोग इस बार राजस्थान की सैर करने जाएँगे-

(अ) सर्दी की छुट्टियों में

(आ) गर्मी की छुट्टियों में

(इ) बिहु की छुट्टियों में

(ई) दुर्गापूजा की छुट्टियों में

(ग) जयपुर को 'गुलाबी शहर' कहते हैं, क्योंकि -

(अ) यहाँ गुलाब का सबसे बड़ा बाग अवस्थित है।

(आ) यहाँ हर भवन के सामने गुलाब के पौधे लगे हुए हैं।

(इ) यहाँ गुलाबी रंग के संगमरमर की खानें हैं।

(ई) यहाँ के प्रत्येक भवन में गुलाबी रंग का उपयोग किया गया है।

(घ) निकिता की राजस्थान यात्रा में निम्नलिखित स्थानों के दर्शन का सही क्रम क्या रहा?

(अ) जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर, माउंट आबू

(आ) जयपुर, उदयपुर, माउंट आबू, जैसलमेर

(इ) जैसलमेर, माउंट आबू, उदयपुर, जयपुर

(ई) उदयपुर, जैसलमेर, माउंट आबू, जयपुर

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) निकिता ने गुवाहाटी से दिल्ली तक की यात्रा किस रेलगाड़ी से की?

(ख) राजस्थान का 'स्वर्ण शहर' किस शहर को कहा जाता है?

(ग) राजस्थान के किस स्थान पर विश्व प्रसिद्ध ऊँटों का मेला लगता है?

(घ) राजस्थान के एक प्रसिद्ध नृत्य के नाम का उल्लेख करो।

DAILY ASSAM

आओ, इन्हें भी जानें :

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान और सरिस्का टाइगर रिजर्व

राजस्थान में स्थित रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान देश के बेहतरीन बाघ संरक्षण क्षेत्रों में से एक है। 1981 ई. में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला। इस उद्यान में जानवरों के अलावा पक्षियों की लगभग 264 प्रजातियाँ देखी जा सकती हैं।

राजस्थान का दूसरा राष्ट्रीय उद्यान है- सरिस्का टाइगर रिजर्व। 1955 ई. में इसे एक अभयारण्य घोषित किया गया था और 1979 ई. में इसे प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत टाइगर रिजर्व बनाया गया था।

पुष्कर मेला

अजमेर से लगभग 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है पुष्कर। यहाँ पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक भी आते हैं। ऊँटों का व्यापार ही यहाँ का मुख्य आकर्षण है। मीलों दूर से ऊँट-व्यापारी अपने पशुओं के साथ पुष्कर आते हैं। पच्चीस हजार से भी अधिक ऊँटों का व्यापार यहाँ पर होता है। यह संभवत: संसार भर में ऊँटों का सबसे बड़ा मेला है।

पाठ के आस-पास

1. पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान की तरह असम भी एक महत्वपूर्ण राज्य है। असम के मुख्य पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी हासिल करो और उनकी एक तालिका बनाओ।
2. अगर तुम्हें गुवाहाटी से जयपुर की यात्रा रेलगाड़ी से करनी हो तो कौन-कौन-सी ट्रेनों से जा सकते हो, पता लगाओ और एक सूची बनाओ।
3. भारत के मानचित्र में राजस्थान कहाँ है, देखो और उसकी चारों सीमाओं से लगे राज्यों/देशों के नाम लिखो।
4. क्या तुम कभी कहीं घूमने गए हो ? अगर हाँ तो उस यात्रा के बारे में तुम्हें जो कुछ याद है, कक्षा में सुनाओ।

भाषा-अध्ययन

1. समानार्थक शब्द :

आँख
चक्षु
नेत्र
नयन

फूल
पुष्प
कुसुम
सुमन

ऊपर के चित्रों को देखो। प्रत्येक चित्र के साथ दिए गए चारों शब्दों के अर्थ में कोई अंतर नहीं है। ऐसे समान अर्थ वाले शब्दों को **समानार्थी** शब्द अथवा **पर्यायवाची** शब्द कहते हैं।

आओ, कुछ और समानार्थी शब्द जानें :

1. सूर्य = आदित्य, रवि, सूरज
2. हाथ = हस्त, कर, पाणि
3. आग = अग्नि, ज्वाला, अनल
4. रात = रजनी, रात्रि, निशा
5. पानी = जल, नीर, अंबु
6. चंद्र = चाँद, शशि, मयंक

अब तुम नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो समानार्थी शब्द लिखो :

सागर = ... पुस्तक = ...

पेड़ = ... पक्षी = ...

2. विपरीतार्थक शब्द :

नीचे के वाक्यों को ध्यान से देखो :

1. **लिखित** परीक्षा के बाद **मौखिक** परीक्षा होगी।
2. **डरपोक** मत बनो, **निडर** बनो।
3. प्रश्न **सरल** था या **कठिन**?

ऊपर के प्रत्येक वाक्य में मोटे अक्षरों में छपे शब्द एक-दूसरे के उलटा अथवा विपरीत अर्थ दे रहे हैं। ऐसे शब्दों को **विपरीतार्थक** शब्द अथवा **विलोम** शब्द कहते हैं।

अब तुम कम से कम बीस शब्द संकलित करो और उनके विपरीतार्थक शब्द लिखो।

3. (क) को चिह्न का प्रयोग :

मैंने हरि को बुलाया। पिताजी ने मुझको एक कलम दी।

माँ ने बच्चे को सुलाया। मोहन ने रमेश को मिठाई दी।

वाक्य में जिस पर क्रिया के कार्य का फल पड़ता है तथा जिसे कुछ देने अथवा जिसके लिए कुछ करने का भाव प्रकट होता है, उसके साथ को चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

अब ऐसे पाँच वाक्य और लिखो जिनमें **को** चिह्न का प्रयोग किया गया हो और शिक्षक को दिखाओ।

(ख) से चिह्न का प्रयोग :

मैं कलम से लिखता हूँ। पेड़ से पत्ता गिरा।

किसान बैल से खेत जोतता है। मेरे पिताजी दिल्ली से आए है।

वाक्य में कर्ता जिस साधन के द्वारा क्रिया को संपन्न करता है, उसके साथ से चिह्न का प्रयोग होता है। इसके अलावा जब किसी का अन्य किसी से अलगाव प्रकट हो, तब भी से चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

अब तुम ऐसे पाँच वाक्य और लिखो जिनमें **से** चिह्न का प्रयोग हो और शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

आओ, एक खेल खेलते हैं: *कक्षा के सभी विद्यार्थी दो समूहों में बँट जाओ। अब पहले समूह का एक विद्यार्थी कोई ऐसा एक वाक्य बोलो जिसमें 'को' चिह्न का प्रयोग हो। उसके बाद दूसरे समूह का एक विद्यार्थी उसी तरह एक ऐसा वाक्य बोलो जिसमें 'से' चिह्न का प्रयोग हो। खेल बिना रुके चलते रहना चाहिए। जो समूह सही वाक्य बनाता जाएगा, उसकी जीत और जो सही वाक्य नहीं बना सकेगा उसकी हार मानी जाएगी। है न मजेदार!!!*

4. सकारात्मक, नकारात्मक और प्रश्नबोधक वाक्य :

जिस वाक्य से किसी बात के होने का बोध हो उसे **सकारात्मक वाक्य** कहते हैं।

जैसे- हमने खाना खा लिया। वह चला गया।

जिस वाक्य से किसी बात के न होने का बोध हो उसे **नकारात्मक वाक्य** कहते हैं।

जैसे- हमने खाना नहीं खाया। वह नहीं गया।

जिस वाक्य से किसी प्रकार के प्रश्न किए जाने का बोध हो उसे **प्रश्नबोधक वाक्य** कहते हैं। ऐसे वाक्यों के अंत में पूर्ण विराम की जगह इस चिह्न (?) का प्रयोग किया जाता है। जैसे- क्या तुमने खाना खा लिया? क्या वह चला गया?

आओ, निम्नलिखित वाक्यों को पहचानें और उनका प्रकार बताएँ :

1. किताब की कीमत क्या है? — प्रश्नबोधक वाक्य
2. मैंने रेगिस्तान नहीं देखा है। — .....
3. हम राजस्थान घूमने गए थे। — .....
4. दीपा नाचना नहीं जानती। — .....
5. बच्चा कैसे गिर गया? — .....
6. इस जंगल में जानवर नहीं है। — .....
7. मैंने ताजमहल देखा है। — .....

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ
व्यक्त	=	प्रकट करना
सुनियोजित	=	सुंदर ढंग से सजाया हुआ
उपयोग	=	व्यवहार
वेनिस	=	इटली देश का एक प्रसिद्ध शहर

शब्द		अर्थ
हिल स्टेशन	=	पहाड़ी स्वास्थ्यवर्धक स्थान
खूबसूरती	=	सुंदरता
मरुस्थल	=	रेगिस्तान
कठपुतली	=	लकड़ी के बने छोटे-छोटे पुतले